

विचार बिन्दु

भोली भाली सूरत वाले होते हैं जल्लाद भी। –उर्दू कहावत

हमारी लड़ाई पाकिस्तान से है, भारतीय मुसलमानों से नहीं

22 अप्रैल 2025 को जिस निर्ममता और नृशंसता से आतंकवादियों ने पहलगाम, कश्मीर में घूमने गए 26 पर्यटकों की हत्या की, उसने पूरे देश को दहला दिया है। देशवासियों को इस बात ने और भी अधिक गुस्से में भर दिया है कि आतंकवादियों ने पर्यटकों से उनका धर्म पूछा और हिन्दू पुरुषों की पहचान करके उनकी हत्या की। अब तक आतंकवादियों को पकड़ा नहीं जा सका है जबकि सेना एवं अन्य सुरक्षा बलों ने पूरा जोर लगा रखा है। प्रधानमंत्री मोदी ने यह हुंकार भरी है कि आतंकवादी दुनिया के किसी भी कोने में छिपे हैं, उन्हें ढूंढ कर निकाला जाएगा और ऐसी सजा दी जाएगी जिसकी कल्पना भी नहीं की होगी ।

सर्वदलीय बैठक में सरकार द्वारा यह स्वीकार किया गया कि सुरक्षा प्रबंधन में कुछ चूक तो हुई है अन्यथा जिस स्थान पर दो-तीन हजार पर्यटक हों वहां कोई सुरक्षा बल मौजूद कैसे नहीं था । जिम्मेदारी तय होने पर दोषी के विरुद्ध कार्यवाही भी की जाएगी।

नागरिकों पर हमले की यह आतंककारी घटना 26 नवंबर, 2008 को मुंबई के ताज होटल में हुई घटना के बाद सबसे बड़ी घटना है। प्रारंभिक सूचनाओं से यह स्पष्ट है कि इस आतंकवादी घटना को पाकिस्तानी आतंिकियों ने अंजाम दिया है।

संतोष की बात है कि सदैव की तरह देश की 142 करोड़ जनता पूरी तरह से सरकार के साथ है। सभी राजनीतिक दलों ने विभिन्न मतभेद होने के बावजूद, सरकार के साथ एक जुटा व्यक्त की है। सरकार से उन्होंने यह भी अपेक्षा की है कि सरकार इस निर्मम हत्याकांड का पूरी कड़ाई से और बहुत मजबूती से पाकिस्तान के विरुद्ध कार्रवाई करके, उसे सबक सिखाए।

सरकार ने अपनी ओर से एक बहुत बड़ा कदम उठाते हुए सिंधु जल समझौते को एक तरफा स्थगित कर दिया है । ऐसा 1960 के समझौते के बाद पहली बार हुआ है। जिस प्रकार के शब्दों का प्रयोग प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में किया है, उससे यह लगता है कि सरकार आर्थिक, कूटनीतिक और सैन्य सभी स्तर पर पाकिस्तान को उपयुक्त जवाब देगी। सभी राजनीतिक दलों ने सरकार को यह विश्वास दिलाया है कि वे, सभी सरकार की हर कार्यवाही उसके साथ हैं। जो भी कदम सरकार उठाएगी, उसमें उनका समर्थन है।

सरकार अपना उपयुक्त समय देखकर कार्रवाई करेगी। देश उसी की प्रतीक्षा कर रहा है । पाकिस्तान से आए आतंकियों ने जिस प्रकार से धर्म के आधार पर पर्यटकों की हत्या की है, उसका स्पष्ट उद्देश्य यही था कि देश में हिंदू और मुसलमान के बीच में घृणा और तनाव उत्पन्न किया जाय। पाकिस्तान का उद्देश्य ही यह है कि भारत में अस्थिरता और अशांति फैले। पाकिस्तान को यह बात लगतातर साल रही है कि कैसे भारत के हिंदू और मुसलमान शांति के साथ रहते हुए देश की प्रगति में बराबर का योगदान दे रहे हैं। यह भारतवासियों की परिपक्वता और समझदारी का ही परिणाम है कि उन्होंने पाकिस्तान के इस कुत्सित प्रयास को सफल नहीं होने दिया है।

इस दर्दनाक घटना के संबंध में कई वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे हैं । जिन व्यक्तियों की हत्या हुई है, उनके परिवार ने कहा है कि किस प्रकार स्थानीय मुस्लिम लोगों ने उनकी जान को बचाया है। ऐसा करते समय उन्होंने अपनी जान की भी परवाह नहीं की। स्थानीय टैक्सि वाले, होटल वाले, खच्चर वाले एवं अन्य लोगों ने अनेक पर्यटकों की जान बचाई है।

एक बहुत ही मार्मिक वीडियो इस संबंध में चल रहा है जिसमें छत्तीसगढ़ के भाजपा पार्षद लक्की की पत्नी यह कहती है कि कैसे उनके बच्चों और परिवार की जान बचाने में स्थानीय दूरिस्ट गाइड नज़ाकत ने सहायता की। वह उनके छोटे बच्चों को अपनी गोद में लेकर जमीन पर लेट गया ताकि उन्हें बचाया जा सके। उसने तो यहाँ तक कहा कि यदि कोई गोली लागी भी, तो पहले उसे लगेगी, तब बच्चों तक पहुंचेगी । 27 वर्षीय मुस्लिम युवक द्वारा अपनी जान की बाजी लगाकर लक्की और उसके बच्चों को बचाने की घटना सांघीयत का अदभुत उदाहरण है। इसी प्रकार एक खच्चर वाले आदिल हुसैन ने पर्यटकों को बचाते हुए ने अपनी जान तक दे दी।

इस दर्दनाक घटना को, कुछ देश-विरोधी तत्व, हिंदू-मुस्लिम का रूप देने का प्रयास कर रहे हैं । कुछ लोगों ने देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत कश्मीरी युवकों को शहर से बाहर जाने का अल्टीमेटम दे दिया है। कुछ स्थलों पर उनके साथ मारपीट की भी घटनाएं हुई हैं । हिंदू रक्षा दल के नाम पर जो भी संगठन या दल इस प्रकार के कामों में लिप्त हो रहे हैं, वे परोक्ष रूप में पाकिस्तान के उन आतंकवादियों की ही मदद कर रहे हैं, जिन्होंने देश में अस्थिरता एवं अशांति फैलाने के उद्देश्य से पहलगाम में इस घटना को अंजाम दिया है।

सांसद असदुद्दीन औवैसी जैसे व्यक्ति, जो सामान्यतया सरकार के विरोध में बहुत कठोर बयान देते रहे हैं, उन्होंने भी इस आतंकवादी घटना को देश पर हमले के रूप में बताया है। यह बात सही भी है कि यह घटना केवल 26 पर्यटकों की हत्या तक सीमित नहीं है, इसका उद्देश्य देश के सांप्रदायिक सौहार्द की हत्या करना है। वे उस भावना को मारना चाहते हैं जो सभी धर्म के लोगों को एक साथ

उल्लेखनीय है कि सभी मुस्लिम संगठनों ने, यहां तक कि मुल्लाओं और काजियों

ने भी मस्जिदों से यही संदेश प्रसारित

किया है कि पहलगाम की घटना देश पर

हुआ हमला है और इसका सबको मिलकर

मुकाबला करना है। संतोष की बात यह है

कि कुछ सिरफिरे संगठनों की

उत्तेजनात्मक गतिविधियों के बावजूद मुस्लिम नागरिक उत्तेजित नहीं हुए हैं।

रहे थे। गत दो-तीन सालों से लगभग 2 करोड़ पर्यटक प्रति वर्ष कश्मीर जा रहे थे । इनसे राज्य को लगभग पचास हजार करोड़ों की आय होती है। इससे न केवल स्थानीय नागरिकों को रोजगार मिला, उनकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर हुई है। हमें लगभग दो वर्ष पूर्व कश्मीर जाने का अवसर मिला था तो मैंने यह महसूस किया था कि चपे-चपे पर सुरक्षा बल की उपस्थिति के कारण, पर्यटकों को सुरक्षा का पूरा अहसास होता था। यह समझ से परे है कि, किस प्रकार पहलगाम की बाई –सरण घाटी जैसे महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल पर, जहां बड़ी संख्या में पर्यटक उपस्थित थे, वहां पर कोई सुरक्षा बल क्यों नहीं थे?

यह संभव है कि पाकिस्तान के साथ आने वाले समय में तनाव और बढ़े और सरकार की ओर से पाकिस्तान को माफ़ूल जवाब दिया जाए। इन परिस्थितियों में देश के अंदर एक जुटता और शांति बने रहना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे समय में भारतीय मुसलमान को शंका की दृष्टि से देखने की कार्रवाई करना और उन्हें कश्मीर की घटना के साथ जोड़कर देखना, देश के हित के विपरीत काम करने जैसा ही होगा। ऐसा करके हम पाकिस्तान की ही मदद करेंगे। जिस उद्देश्य से आतंकियों ने इस घटना को किया है, उसमें अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ही करेंगे।

वर्तमान समय में जब भारतीय नागरिकों का दायित्व है कि वह हिंदू-मुस्लिम सौहार्द को बढ़ाने में अपना सहयोग करें, ताकि मुसलमानों में कतई अलगाव का भाव उत्पन्न ना हो। जब हम कश्मीरी छात्रों को अपनी संस्थाओं से वापस कश्मीर जाने की बात कहेंगे तो उनमें एक प्रकार से हम यह भाव जाने–अनजाने में बिठा देंगे कि कश्मीर भारत का भाग नहीं है। यही हमारी सबसे बड़ी गलती होगी ।

दिल्ली से घूमने गए एक पर्यटक अमरेंद्र सिंह को मूलतः बिहार के है, ने अपनी फेसबुक पोस्ट पर लिखा कि जब इस आतंकवादी घटना के कारण उन्हें एक ही दिन में यात्रा सामाप्त कर लौटना पड रहा था तो, कैसे वहां के टैक्सी और होटल वालों ने, शेष समय की बुकिंग के बावजूद भी कोई पैसा नहीं लिया और उसे वापस लौटा दिया। जब उन्हें पैसा देने की जिद की गई तो उन्होंने साफ कहा कि “जब आप कश्मीर में घूम ही नहीं पाए, तो हमें आपसे पैसा लेने का कोई हक नहीं है”। इस प्रकार की भावना केवल अच्छे ईंसान की ही हो सकती है न कि पर्यटक के माध्यम से केवल पैसा कमाने की भावना वाले व्यक्ति की। उल्लेखनीय है कि पहलगाम की त्रासदी के बाद वहां से लौटने वाले व्यक्तियों के लिए कुछ एयरलाईंस ने अपना किराया 1० गुणा तक बढ़ा दिया था।

जिस प्रकार के स्वचालित हथियार आतंकियों के पास थे और जितना समय उन्हें मिला था, उसे देखते हुए इस घटना में मरने वालों की संख्या बहुत अधिक हो सकती थी। ऐसे समय में स्थानीय व्यवसायियों ने जैसी भी संभव था, पर्यटकों को वहां से सुरक्षित निकालने में अपनी जान को जोखिम में डालकर सहयोग किया। इसकी पुष्टि करने वाले कई वीडियो सोशल मीडिया पर उपलब्ध हैं ।

हमारा दायित्व यह बनता है कि किसी भी समूह या सामाजिक मंच पर यदि कोई व्यक्ति भारतीय मुसलमानों के प्रति नफरत फैलाने वाली कोई बात करे या इस घटना को हिंदू-मुसलमान की घटना बताने का प्रयास करे, तो उसका डटकर विरोध करना चाहिए। हमें उनके सम्पन्न उन घटनाओं का जिक्र करना चाहिए जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। ऐसा करके हम देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन बेहतर तरीके से कर पाएंगे ।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि देश की प्रगति तेज गति से तब ही संभव है जब देश में शांति हो और परस्पर विश्वास का वातावरण हो। शत्रु देश पाकिस्तान, अपने मंसूबों में कामयाब होता दिखेगा, यदि हमारे यहां के कुछ भ्रमिंत संगठन उनके जाल में फंसकर विभिन्न प्रकार के सोशल मीडिया के माध्यम से मुसलमानों के प्रति नफरत उत्पन्न करने का काम करेंगे।

उल्लेखनीय है कि सभी मुस्लिम संगठनों ने, यहां तक कि मुल्लाओं और काजियों ने भी मस्जिदों से यही संदेश प्रसारित किया है कि पहलगाम की घटना देश पर हुआ हमला है और इसका सबको मिलकर मुकाबला करना है। संतोष की बात यह है कि कुछ सिरफिरे संगठनों की उत्तेजनात्मक गतिविधियों के बावजूद मुस्लिम नागरिक उत्तेजित नहीं हुए हैं। वे यह समझते हैं कि बहुत ही कम लोग अपने स्वार्थ के कारण ऐसा कर रहे हैं।

हम सबको यह समझना होगा कि भारत का मुख्य शत्रु पाकिस्तान है न कि कश्मीरी या भारत के अपने भागों में रहने वाले मुसलमान। यह भावना जाने–अनजाने भी उनके मन में न आए, यह सुनिश्चित करना हम सबका कर्तव्य है।

अब तो देश को यही प्रतीक्षा है कि सरकार किस प्रकार से पाकिस्तान को इस नापाक हरकत का मुंह तोड़ जवाब देती है। इसी सरकार ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अपनी इच्छा शक्ति के बल पर, पहले ही 2016 में उड़ी में सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 में बालाकोट में एयर स्ट्राइक की थी।

छोटे–मोटे आर्थिक स्वार्थ को त्याग कर, हमें पाकिस्तान से सभी प्रकार के संबंध विच्छेद करने होंगे, चाहे वे खेलने के संबंध में हो अथवा व्यापार के। देश चाहता है कि आतंकवाद के जनक पाकिस्तान को इस बार अच्छी तरह सबक सिखा ही दिया जाय ।

–अतिथि सम्पादक,

राजेन्द्र भागवत (

पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

संपादकीय

देश को प्रगति पथ पर अग्रसर रहना है तो प्रथम अनिवार्य शर्तें हैं सामाजिक शांति-सद्भाव-सौहार्द्र व वैज्ञानिक सोच-शिक्षा



महवीर सिंह

हमारे देश के संविधान में अल्पसंख्यक शब्द का उल्लेख नहीं हुआ है। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम 1992 के अनुसार निम्न 6 समुदायों को धार्मिक अल्पसंख्यक माना है;—मुस्तिम, बौद्ध, जैन, ईसाई, सिख व पारसी। इसी कानून में, अल्पसंख्यकों की दूसरी पहचान मातृभाषा के आधार पर भाषाई अल्पसंख्यक के आधार पर बताई है।

संविधान का अनुच्छेद 30, धार्मिक व भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी इच्छानुसार शैक्षिक संस्थान बनाने व चलाने का अधिकार देता है। राज्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ भेदभाव नहीं कर सकता है। समानता के सिद्धांत के तहत सभी धर्म वालों को संरक्षण देने का दायित्व सरकारों का है।

सामान्यतया भारत में बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक आपस में अत्यंत सौहार्द्रपूर्ण माहौल में रहते है। एक-दूसरे से मिलते है, एक साथ त्यौहार–उत्सव मनाते है, बधाईयां देते है, गम के मौकों पर मिलते है। एक-दूसरे के साथथापार व वित्तीय सम्बन्ध है। ईसाई, पारसी, बौद्धों के आपसी या बहुसंख्यकों के साथ टकराव के कोई मामले सुने ही नहीं जाते। सिखों व हिंदुओं में सामान्यतः टकराव के अवसर आते नहीं। 30.40 साल पहले, सिख व बहुसंख्यक समुदायों में टकराव की एक-दो अभिग्र घटनाएं हुईं हैं। यदाकदा कुछ दिग्भ्रमिंत लोग विदेशी उकसावों के कारण या आपत्तिका कारणों से कुछ छोटे–मोटे तनाव के बिंदु पैदा कर देते हैं। सामान्यतः त्यौहारों के अवसर पर बहुत छोटी–छोटी बातों को लेकर दोनों ओर के उग्र स्वभाव वाले लोग, अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए तनाव की स्थिति बनाते हैं। धार्मिक जुलूस, मूर्ति विसर्जन–ताजियों–पैगंबर साहब के जन्म दिन आदि के जुलूस, किस रास्ते से जाएगा इस प्रश्तिा का बिंदु बनाया जाता है। तनाव पैदा करने वालों द्वारा

अपनाए जाने वाले कुछ ओर नुस्खे -- कोई अपवित्र वस्तु मंदिर मस्जिद में डाल कर या केवल अफवाह फैलाकर, किसी अन्य समुदाय के पवित्र माने जाने वाले पशु की कुर्बानी की अफवाह फैलाकर, किसी धार्मिक किताब को अपवित्र करना–बेअदबी करना–उसके पन्ने फ़ाड़ कर सड़कों पर बिखेरना आदि। यह काम दोनों तरफ के विघ्न सन्तोषी लोग करते है।

मंदिर–मस्जिद के सामने अनावश्यक अधिक उठराव, अत्यधिक शोर के साथ दोल नगाड़े बजाना, अजान के लिए जोर से लाउडस्पीकर बजाना या न बजाने देने का दुराग्रह, आपत्तिजनक नारे लगाना, अभद्र तरीके से नाचना, किसी ऐसे तंग रास्ते से जुलूस निकालने की हठ धर्मिता करना जहां अभिग्र घटना को कंट्रोल करने में कठिनाई हो आदि से भी तनाव पैदा होता है जो कभी भी बड़ा रूप ले सकते है।

गौ हत्या तनाव का अन्य अनावश्यक मुख्य मुद्दा। धर्मस्थलों के पुरातन व वर्तमान मालिकाना हकों के विवाद भी हिंदू और मुसलमानों के बीच संवेदनशील व तनाव का कारण बनते है। धार्मिक मठाधीशों व ध्धुर मानसिकता के नेताओ की सांप्रदायिक उन्माद और भड़काऊ बयानबाजी के कारण भी त्यौहारों व अन्य अवसर पर तनाव पैदा होरा है। निहित स्वार्थों वाले लोगों द्वारा आम आदमी को कई तरह के प्रलोभनों से उकसा कर लोगों द्वारा दंगे करवाए जाते है। हिन्दू हो या मुसलमान दोनों ओर कुछ लोग रात और दिन ऐसे नारे, सम्बोधन शब्द गद्दने में लगे रहते हैं जिन से सामाजिक शांति को पलौता लगता रहे --भारत माता की जय या जय श्रीराम बुलवाकर किसी का देशप्रेम जांचना, बात–बात पर रामजादे–हराम जादे, पाकिस्तान चले जाओ, इनसे मत खरीदो, उनसे खरीदो, वो कलमा पढ़वाकर कर पहचान करते है तो तुम हनुमान चालीसा पढ़वा कर टेस्ट लो, इत्यादि अवांछित जुमले बोलना, बुलवाना इस्लाम धर्म की किताबों में स्त्रियों का समान करने के उल्लेख में स्त्रियों का समान करने के उल्लेख से किहिंदु दिवियों जैसा स्तुति वाला स्थान नहीं है। हम क्यों किसी के राष्ट्र प्रेम की जाल भारत माता की जय या जय श्री राम बुलवाकर ही करें? जय भारत, जय हिंदुस्तान भी तो बोला जाता है।

कुछ सच्चे–झूठे, स्वधोषित व्याख्याकार लोग स्त्रियों के कपड़ों, आने–जाने, लोगों से मिलने–जुलने आदि पर पाबंदियों के फतवे जारी करते है। किसी एक नागरिक को दूसरे नागरिक के देशप्रेम की जांच का अधिकार नहीं। भारतीय मुसलमानों के पास आजादी के समय भारत या पाकिस्तान चुनने का अधिकार था। यह लोगों को यहां, अपनी जड़ों–परिवेश–भाई चारे के सौहार्द्रपूर्ण माहौल से प्रेम करते थे और सौविधान में दिए संरक्षण के आश्वासनों के कारण ही इन्होंने भारत को अपना देश चुना था। भारत में हिंदुओं और मुसलमानों की धार्मिक और सांस्कृतिक आस्थाएं, मान्यताएं, मूल्य अलग अलग है और यह मतभेदों का प्रमुख मुद्दा है। दोनों समुदायों के अग्रणी लोग अपनी सुविधानुसार व हितों के अनुसार अलग दृष्टिकोण और व्याख्याएं करते है।

नोखा कस्बे में पेयजल संकट गहराया, चौतीना कुआं के हर घर पानी सप्लाई व्यवस्था चरमराई

निजी टयूबवेल मालिकों ने पानी टैंकर की कीमतें दोगुनी कर दी, स्थानीय लोगों ने रोष जताया

■ **सर्व समाज संघर्ष समिति ने प्रदर्शन कर एसडीएम के माध्यम से कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा**

भी बताया गया कि अधिकतर निजी टयूबवेल सरकारी मानकों को पूरा नहीं करते। न तो ड्राइवरो के पास लाइसेंस है और न ही बाहनों का बीमा या फिटनेस सर्टिफिकेट है। इससे दुर्घटना का खतरा बना रहता है। गर्मी के मौसम में जहां सरकार गंदीय परिवारों को मुफ्त पेयजल टैंकर उपलब्ध कराती है, वहीं नोखा में लोगों को महंगे दामों पर पानी खरीदना पड़ रहा है। कटीजेंसी प्लान में आवंटित बजट का भी पेयजल के लिए कोई उपयोग नहीं हो रहा है।

ज्ञापन में मांग की है कि इस भीषण गर्मी के मौसम में निजी पेयजल टयूबवेल संचालकों द्वारा बढोतरी की गई दरें जल्द से जल्द कम व वाजिब दर निर्धारित किए जाने हेतु पाबन्द

किया जाए। सभी निजी पेयजल टैंकरों के ड्राइवरों के ड्राइविंग लाइसेंस सहित संबंधित समस्त कागजातों की पूर्ण जांच करवाई जाए और निजी टयूबवेल के लिए निर्धारित सभी मापदण्डों की पालना करवाई जाए। नोखा कस्बे के प्रत्येक गरीब परिवार के लिए निशुल्क पेजयल पानी टैंकर की समुचित व्यवस्था करवाई जाए। जलदायविभाग में लम्बे समय से हो रहे भ्रष्टाचार की उच्च स्तरीय जांच करवाई जाए और सालों से जमे बैठे ठेकेदारों को ब्लैक लिस्टेड किया जाए और नोखा शहर क्षेत्र में नियमित पेयजल सप्लाई हेतु कर्मिकों की लांगवुक का निरीक्षण कर पानी सप्लाई बरती जा रही अनियमितताओं के विरुद्ध कार्रवाई जाए। ज्ञापन में बताया कि हमारी चार सूत्री मांगों पर सहानुभूति पूर्वक एक सप्ताह के भीतर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करवाएं, अन्यथा मजबूरन हमें जन आन्दोलन, अनिश्चितकालीन धरना एवं प्रदर्शन करने को मजबूर होना पड़ेगा।

बीकानेर, (निसं)। नहरबंदी के बीच अब गंदे पानी की शिकायतें बढ़ने लगी हैं। बदबूदार पानी और उसमें पीलापन आ रहा है। चौतीना कुआं में ये समस्या लंबे समय से बनी हुई है। पहले खुलासा हुआ था कि सांखला फाटक के पास एक नाले से लाइन लीकेज है, जो नाले से होकर आ रही है। ठीक किया मगर अब वापस पानी गंदा आ रहा है।

दो दिन से मोहल्लेबासियों ने एईएन को बुलाया, मगर टीम मौके पर नहीं आई। चौतीना कुआं के हर घर में उल्टी, दस्त और पेट में ऐंठन की शिकायतें सामने आ रही हैं। घरों में लोग पानी की टंकी का पानी दिखा रहे हैं जिसमें झाग ही झाग दिख रहा है। यही पानी लोग पीने को मजबूर हैं। ये समस्या कई महीने पुरानी है। समाज शिकायतों के बाद जलदाय विभाग जागा और सामने आया कि सांखला फाटक से कुछ दूरी पर एक नाले से पाइप लाइन गुजर रही है। लाइन में लीकेज था इसलिए नाले का गंदा पानी लोगों के घरों तक पहुंच रहा था। जब लोगों ने हल्ला मचाया तो सच्चाई सामने आई। अब वापस वही हालात हो गए। ऊपर से पीएचईडी पर सप्लाई करने का मजबूर है तो वहां भी से कुछ

■ **घरों में लोग पानी की टंकी का पानी दिखा रहे हैं, जिसमें झाग ही झाग दिख रहा है, यही पानी लोग पीने को मजबूर हैं**

पानी ठीक नहीं आ रहा। ऐसे में अस्पतालों में पेट दर्द, उल्टी दस्त के रोगी पहुंच रहे हैं। कायदे से अब तक विभाग एक दिन छोड़कर जलापूर्ति कर रहा है तो पानी अच्छे से फिल्टर होना चाहिए।

निवर्तमान पार्षद आनंद सिंह सोद्हा का कहना है कि तीन दिन से चौतीना कुआं में लोग बेहाल हैं। पीएचईडी के एईएन वाली कीचरी को तीन दिन से मौके पर बुला रहे हैं, मगर वे आज की कल कर रहे हैं। लगता है अब दफ्तर पर ताला ही डालना पड़ेगा। लोग मर रहे हैं और अधिभूतलों को मौका मुआयना करने की फुर्तत ही नहीं। वैसे ही लोग कटौती शुरू होने से दुखी हैं। ऊपर से गंदा पानी सप्लाई हो रहा है। यहां जेलवेल टंकी से सप्लाई होती है।

मेघ
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थयिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लेंगे। नवीन कार्य योजना बनेगी। आर्थिक मामलों में लाभवाही ठीक रहेगी।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में संदेश प्राप्त होंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

तुला
चन्द्रमा अवग भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मार्गलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवाहिक मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटक हुए कार्य बने लेंगे। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

मकर
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर–परिवार में धार्मिक–मार्गलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।